श्री प्रताप सिंह पोखरियाल पर्यावरण प्रेमी देवभूमि उत्तराखंड के सीमांत ग्राम भैत, पट्टी गाज़ना तहसील डूंडा, जिला उत्तरकाशी वर्तमान भटवाड़ी रोड उत्तरकाशी का जन्म जुलाई 1958 में हुआ विषम आर्थिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उच्च शिक्षा हासिल नहीं कर पाए समय गुजरने पर चेतना जागने से वनों से अटूट लगाव तथा वृक्षारोपण स्वयं के बलबूते पर जमीन पर अटूट संकल्प लेकर १९७१ वन एवम पेड़ों के जीवित रखने वन संरक्षण की ऐसी स्नेह ह्रदय में जागी कि इनके निस्वार्थ प्रयास व प्रकृति पर्यावरण जागरूकता को देखते हुए पर्यावरण प्रेमी के उपनाम से परिचित होने लगे अ। श्री प्रताप पोखरियाल द्वारा अपने लक्ष्य को निस्वार्थ निष्ठा एवं ईमानदारी से निर्वहन करते हुए वन संरक्षण पौधरोपण वर्षा जल संरक्षण तथा भूस्खलन कटाव को रोकने के अत्यंत प्रभावी व अथक प्रयास से ग्रामीणों को घास चारा पति और जलौनी सुखी लकड़ी घर के निकट ही उपलब्ध होने लगी । एक वृक्ष 10 पुत्र के समान माना जाता है किंतु श्री प्रताप पोखरियाल पर्यावरण प्रेमी ने एक वृक्ष नहीं 06 घने वन 4 गांव के पास ग्राम भैंत एवं एक उत्तरकाशी शहर के वर्णावत तलहटी पर एवं एक गंगोत्री हेलीपैड पर आगे भूस्खलन क्षेत्र में स्थापना कर जिसमें लाखों वृक्षों का रोपण कर चुके हैं, जहां औषधीय पादपों से लेकर 4 चारापत्ती, इमारती लकड़ी एवं अन्य महत्वपूर्ण पौध आज तक लहरा रहे हैं तथा प्रकृति को प्राण वायु संचार कर रहे हैं । यही नहीं वर्ष 1991 के अक्टूबर में उत्तरकाशी में आए विनाशकारी भूकंप में इन्होंने अपने जीवन की परवाह न करते हुए जैक हैमर की सहायता से तत्कालीन स्टेट बैंक में फंसे मैनेजर के परिवार को बचाने हेतु सराहनीय अदम्य साहस का परिचय दिया । वर्तमान में कोविड-19 में स्वयं से तैयार किए गए हजारों लीटर गिलोय काढा को जिसमें तूल्सी, आंवला, तेजपात, एलोवेरा, अश्वगंधा से तैयार कर निशुल्क वितरण किया गया है । इनके द्वारा समय-समय पर गंगा स्वच्छता कार्यक्रम गंगा तटों की सफाई निस्वार्थ भाव से की गयी हैं जो हम सबके लिए एक मिसाल है ।

श्री प्रताप पोख्रियाल ने वर्णावत तलहटी में एक नई पहचान बनाई है । वर्ष 2003 में वर्णावत से प्रकृति ने कहर बरपाया जिससे पर्यावरणमुनि ने आसमान को बदलने का कार्य किया । इनका प्रकृति के प्रति अत्यंत लगाव है तथा इन्होंने असंख्य जड़ी बूटियों का केंद्र बना दिया जिसमें एक ही छत के नीचे 300 प्रजाति की पौध द्वारा हर्बल वाटिका बनाकर तैयार किया जो आज जैव विविधता, विद्यार्थियों शोधकर्ताओं के लिए भी वरदान साबित हो रहा है । श्री प्रताप पोखरियाल द्वारा गत वर्ष उत्तरकाशी जनपद टिहरी जनपद में 21 हर्बल गार्डन विभिन्न संस्थाओं विद्यालयों और महाविद्यालयों हेतु बनाए गए हैं । यही नहीं कोविड काल में लगभग 10000 लीटर हर्बल काढ़ा तैयार कर विभिन्न अस्पतालों में मरीजों को मुफ्त वितरण किया गया । यही नहीं श्याम स्मृति वन पर्यावरण एवं हिमालय पादप बैंक में जन्मदिन शादी जैसे शुभ अवसरों पर पौधरोपण या भेंट करने हेतु इच्छुक अभ्यर्थियों एवं शादी के जोड़े हेतु उपलब्ध कराए जा सकते हैं । बैंक में लगभग 300 से अधिक पौधे रोपे गए हैं जो महत्वपूर्ण हर्बल पौध हैं ।

श्री प्रताप सिंह पोखरियाल द्वारा अतुलनीय कार्य को करने एवं लगभग 40 वर्षों से उनके प्रकृति के प्रति अटूट प्रेम एवम निश्ठा के कारण इस जनपद ही नही अपितु पूरे उत्तराखंड राज्य में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति अपनी अतुलनीय पहचान बनाई है। अतः श्री प्रताप सिंह पोखरियाल

पर्यावरण प्रेमी को इनके द्वारा किये गए कार्यों का सुस्पष्ट प्रमाण पत्रों एवं धरातल पर किये गए उत्कृष्ट कार्यो को देखते हुए वर्ष 2023 में पदम श्री पुरष्कार प्रदान करने हेतु अभिमत करता हूँ।

वर्ष 2010 में गंगोत्री से गोमुख तक 5 क्विंटल प्लास्टिक एकत्र किया गया जिसका तत्कालीन उत्तराखंड सरकार एवं जिलाधिकारी द्वारा प्रथम पुरस्कार ₹15000 एवं सम्मान पत्र प्रदान किया गया |

आपके द्वारा वर्ष 1991 में आए विनाशकारी भूकंप में प्रभावितों की सहायता की गई साथ ही वर्ष 2012-13 में आई विनाशकारी बाढ़ में भी बाढ़ प्रभावितों की सहायता की गई तथा कोविड-19 में जिला अस्पताल में कोविड-19 मरीजों को स्वनिर्मित गिलोय काढा वितरित कर उनके रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जाने में सहायता की गई |